



बुंदेलखंड क्षेत्र और भारत में महिलाओं के विकास की तुलनात्मकस्थिति

कार्तिकेय सिंह¹, प्रोफेसर (डॉ.) अश्वजीत चौधरी²

¹शोध छात्र पीएचडी, भूगोल विभाग, यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद

²प्रोफेसर, भूगोल विभाग, यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद

Article Info

Accepted : 01 March 2025

Published : 20 March 2025

Publication Issue :

March-April-2025

Volume 8, Issue 2

Page Number : 38-60

ऐबस्ट्रैक्ट- विकास एक ऐसी नियोजनप्रक्रिया है जो किसी भी क्षेत्र में लोगों के जीवन की गुणवत्ता को सुधारने का कार्यकरती है। स्वतंत्रता के बाद देश में क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने और समग्र विकासको सुनिश्चित करने हेतु आर्थिक नियोजन को पाँच वर्षीय योजनाओं के माध्यम से अपनाया गया। महिलाओं का पिछड़ापन न केवल सामाजिक संतुलनको प्रभावित करता है, बल्कि यह राष्ट्र की शांति, समृद्धि और विकास में भी बाधा बनता है, क्योंकि जब आधी आबादी समस्याओं से जूझती है, तो देश की समृद्धि अधूरी रह जाती है। बुंदेलखंड क्षेत्र में महिलाएं सबसे कमजोर और हाशिये पर रहने वाले वर्गों में से एक हैं। क्षेत्रीय असमानताओं और महिलाओं के विकास के स्तर को मापने के लिए समग्र सूचकांकविधि (Composite Index Method) का प्रयोग किया गया है। आर्थिक विकास के तीनों सूचकों में शीर्ष स्थान प्राप्त करने के कारण झाँसी बुंदेलखंड क्षेत्र का सर्वाधिक विकसित जिला पाया गया है। वहीं, स्वास्थ्य संकेतकों में सबसे खराब प्रदर्शन के कारण बाँदा जिला स्वास्थ्य विकास के मामले में सबसे पिछड़ा है। महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति आंशिक रूप से बेहतर हुई है, क्योंकि अब वे स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ ले रही हैं और उनके बच्चों को भी पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

प्रमुख शब्दावलि: नियोजन, पिछड़ापन, महिला, सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य, समग्र सूचकांक विधि, स्वास्थ्य संकेतकों

1.1 परिचय- विकास एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य किसी क्षेत्र में लोगों के जीवन स्तर को सुधारना होता है। बुंदेलखंड क्षेत्र मध्य भारत में स्थित एक पर्वतीय क्षेत्र है, जो उत्तर प्रदेश (यूपी) और मध्य प्रदेश (एमपी) में विभाजित है। यह क्षेत्र कुल तेरह जिलों में फैला हुआ है। ऐतिहासिक और भौगोलिक समानता के बावजूद वर्तमान में यह क्षेत्र दो राज्यों में विभाजित है।

किसी भी देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में महिलाओं की स्थिति रीढ़ की हड्डी के समान होती है। महिलाओं का जीवन स्तर और सामाजिक-आर्थिक स्थिति विकासशील देशों, जैसे भारत, में समग्र विकास का महत्वपूर्ण पहलू है। ऐसे देशों में वास्तविक विकास तभी संभव है, जब महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण समान रूप से

सुनिश्चित हो। महिलाओं की पिछड़ी स्थिति राष्ट्र की शांति, समृद्धि और कल्याण को प्रभावित करती है, क्योंकि जब आधी आबादी ही समस्याओं से जूझ रही हो तो देश कैसे प्रगति कर सकता है?

महिलाओं को दुनिया भर में भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ता है, और भारत भी इससे अछूता नहीं है। यह देश परंपराओं, रीति-रिवाजों और आस्थाओं का प्रतीक है, जो समय के साथ बदलती रहती हैं। विडंबना यह है कि एक ओर हम देवी की पूजा करते हैं, देश को "भारत माता" कहते हैं, वहीं दूसरी ओर महिलाओं के साथ घर और बाहर दोनों जगह बुरा व्यवहार किया जाता है।

हालांकि, वर्षों में महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की है और लिंग असमानता कुछ हद तक कम हुई है, फिर भी शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक संसाधनों, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक अवसरों में महिलाओं की पहुंच सीमित बनी हुई है। शिक्षा एक ऐसा साधन है, जो महिलाओं को समाज में पुरुषों के समान अवसर प्रदान करने में सक्षम बनाता है। शिक्षा महिलाओं की छिपी हुई प्रतिभा, क्षमताओं और मूल्य को उजागर करती है, जिससे समाज में उनका दर्जा ऊंचा होता है। इसके अलावा, शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को कृषि के अतिरिक्त गैर-कृषि क्षेत्रों में रोजगार के अवसर मिलते हैं।

महिलाओं की स्वायत्तता उनके गतिशीलता पर नियंत्रण, भूमि पर स्वामित्व और स्वयं सहायता समूहों में भागीदारी में देखी जाती है। स्वयं सहायता समूहों में जुड़ाव उन्हें गैर-कृषि क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्रदान करता है। लिंग असमानता समाज और राष्ट्र के विकास में बाधक होती है। यह सिर्फ महिलाओं का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह पुरुषों और महिलाओं दोनों के अवसरों, बाधाओं और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का विषय है।

स्वतंत्रता के बाद सरकार ने महिलाओं की स्थिति को सशक्त बनाने और लैंगिक समानता स्थापित करने के लिए अनेक प्रयास किए, फिर भी बुंदेलखंड क्षेत्र में महिलाएं सबसे अधिक कमजोर और उपेक्षित वर्गों में से एक हैं। इस क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के कारण महिलाएं कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे परिवार की देखभाल, जल, ईंधन, चारे और वनों से उत्पाद संग्रह करने का कार्य करती हैं। इसके साथ ही, वे फसल उत्पादन, पशुपालन, बीज एकत्रीकरण और संरक्षण जैसे कार्यों में भी सक्रिय रहती हैं। इतनी सारी जिम्मेदारियों के बावजूद, बुंदेलखंड में महिलाओं का सशक्तिकरण अभी भी कमजोर है।

1.2 अनुसंधान पद्धति

1.2.1 डेटा स्रोत

अध्ययन में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त साहित्य और आंकड़ों का उपयोग किया गया है, जैसे:

भारत की जनगणना, 2001 और 2011,

मध्य प्रदेश का राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) 2015-16,

उत्तर प्रदेश का राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) 2015-16,

उत्तर प्रदेश का सांख्यिकीय सारांश, 2022,

मध्य प्रदेश का सांख्यिकीय सारांश, 2022,

भारत सरकार का मानव विकास रिपोर्ट नीति आयोग और सांख्यिकी विभाग।

इन स्रोतों से सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी आंकड़े प्राप्त किए गए हैं।

1.2.2 डेटा विश्लेषण - इस अध्ययन में अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न तत्वों की स्थिति को दर्शाने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण का उपयोग किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में महिलाओं की वर्तमान सामाजिक और आर्थिक स्थिति को स्पष्ट करने के लिए सांख्यिकीय तालिकाओं का उपयोग किया गया है। बुंदेलखंड में महिलाओं के विकास का आकलन करने के लिए

मानव विकास अनुक्रमण (Human Development Indexing) का उपयोग किया गया है। महिलाओं के विकास स्तर में क्षेत्रीय असमानताओं और विसंगतियों को मापने के लिए समग्र सूचकांक (Composite Index) विधि का प्रयोग किया गया है। गणना की प्रक्रिया निम्नलिखित है:

पहला चरण:

विकास के संकेतकों (Variables X) का चयन किया गया है।

दूसरा चरण:

प्रत्येक चयनित विकास संकेतक का औसत (X_i) निकाला गया है। औसत की गणना का सूत्र निम्नलिखित है: $\sum X / N$
जहाँ:

$\sum X$ = सभी संकेतकों के मान का योग।

N = कुल आवृत्ति।

तीसरा चरण:

प्रत्येक स्तर पर संकेतक मान का विचलन (d) निम्नलिखित सूत्र द्वारा निकाला गया है:

$$(X - X_i)$$

जहाँ:

X = प्रत्येक स्तर पर संकेतक का मान।

X_i = क्रमिक संकेतकों का औसत।

चौथा चरण:

मानक विचलन (Standard Deviation) की गणना निम्नलिखित सूत्र द्वारा की गई है:

$$SD = \sqrt{\sum D^2 / N - 1}$$

जहाँ:

$\sum D^2$ = सभी विचलनों के वर्ग मान का योग।

N = कुल आवृत्ति।

पांचवां चरण:

मानक स्कोर (I) की गणना प्रत्येक संकेतक के विचलन ($X - X_i$) को मानक विचलन (SD) से विभाजित करके की गई है:

$$(X - X_i / SD)$$

छठा चरण:

सभी मानक स्कोर का योग करके कुल मान (Gross Value) निकाला गया है।

सातवां चरण:

समग्र सूचकांक स्कोर (Composite Index Score) की गणना कुल मान को विकास संकेतकों की कुल संख्या से विभाजित करके की गई है।

1.3 बुंदेलखंड और भारत में महिलाओं के विकास की तुलनात्मक स्थिति

1.3.1 सामाजिक स्थिति

1.3.1.1 जनसंख्या- तालिका 1 में बुंदेलखंड क्षेत्र के 13 जिलों की जनसंख्या, उनके क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर में), कुल जनसंख्या, पुरुष और महिला जनसंख्या का विवरण दिया गया है। इन जिलों में दतिया, छतरपुर, दमोह, पन्ना, सागर, टीकमगढ़, जालौन, झाँसी, ललितपुर, हमीरपुर, महोबा, बाँदा और चित्रकूट शामिल हैं।

जनसंख्या में जिलों के बीच महत्वपूर्ण भिन्नता देखी गई है। सागर जिले की जनसंख्या सबसे अधिक (23,78,458), जबकि दतिया जिले की सबसे कम (7,86,754) है। यह अंतर शहरीकरण, औद्योगीकरण और प्रवासन जैसे कारकों के कारण हो सकता है।

हालांकि, जिलों के क्षेत्रफल और उनकी जनसंख्या के बीच सीधा संबंध नहीं है। उदाहरण के लिए, सागर का क्षेत्रफल सबसे बड़ा (10,252 वर्ग किमी) है और इसकी जनसंख्या भी सबसे अधिक है, जबकि छतरपुर का क्षेत्रफल दूसरा सबसे बड़ा (8,687 वर्ग किमी) होने के बावजूद, इसकी जनसंख्या केवल चौथे स्थान पर है (तालिका 1)।

तालिका 1: बुंदेलखंड के 13 जिलों की जनसंख्या (2011)

जिले	क्षेत्रफल (वर्ग किमी में)	कुल जनसंख्या	पुरुष	महिला
दतिया	2902	786754	420157	366597
छतरपुर	8687	1762375	936121	826254
दमोह	7306	1264219	661873	602346
पन्ना	7135	1016520	533480	483040
सागर	10252	2378458	1256257	1122201
टीकमगढ़	5048	1445166	760355	684811
जालौन	4565	1689974	906092	783882
झाँसी	5024	1998603	1057436	941167
ललितपुर	5039	1221592	641011	580581
हमीरपुर	4021	1104285	593537	510748
महोबा	3144	875958	466358	409600
बाँदा	4408	1799410	965876	833534
चित्रकूट	3216	991730	527721	464009

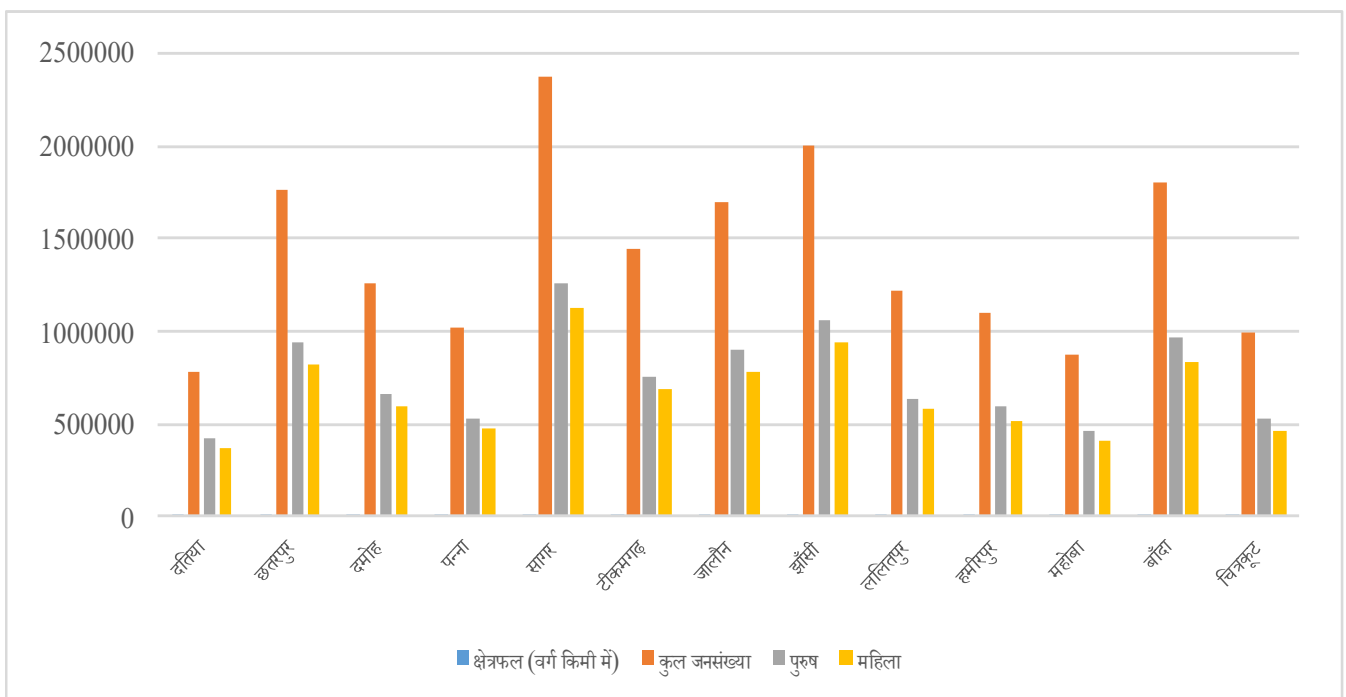
स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है

जनसंख्या घनत्व पर केवल भौगोलिक क्षेत्र ही प्रभाव नहीं डालता, बल्कि अन्य कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी जिलों में पुरुष जनसंख्या, महिला जनसंख्या से अधिक है। यह लैंगिक असंतुलन दोनों राज्यों के कई हिस्सों में आम जनसांख्यिकीय प्रवृत्ति है, जो विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कारकों का परिणाम हो सकता है।

क्षेत्र में जनसंख्या वितरण में महत्वपूर्ण क्षेत्रीय असमानता देखी जाती है। कुछ जिले अन्य जिलों की तुलना में अधिक घनी आबादी वाले हैं, जिससे संसाधनों के आवंटन, बुनियादी ढांचे के विकास और आर्थिक योजना पर प्रभाव पड़ सकता है।

प्रत्येक जिले की जनसंख्या वृद्धि दर का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होगा कि वहां की जनसंख्या बढ़ रही है, घट रही है या स्थिर बनी हुई है (चित्र1)। जनसंख्या के आयु संरचना का विश्लेषण करने से निर्भरता अनुपात (कामकाजी आयु वर्ग के मुकाबले आश्रित जनसंख्या का अनुपात) और भविष्य में जनसंख्या वृद्धि की संभावना का आकलन किया जा सकता है।

इसके अलावा, रोजगार के अवसर, शिक्षा स्तर और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच जैसे सामाजिक-आर्थिक कारकों का विश्लेषण करने से क्षेत्र में जनसंख्या वितरण और वृद्धि को समझने में अधिक व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होगा।

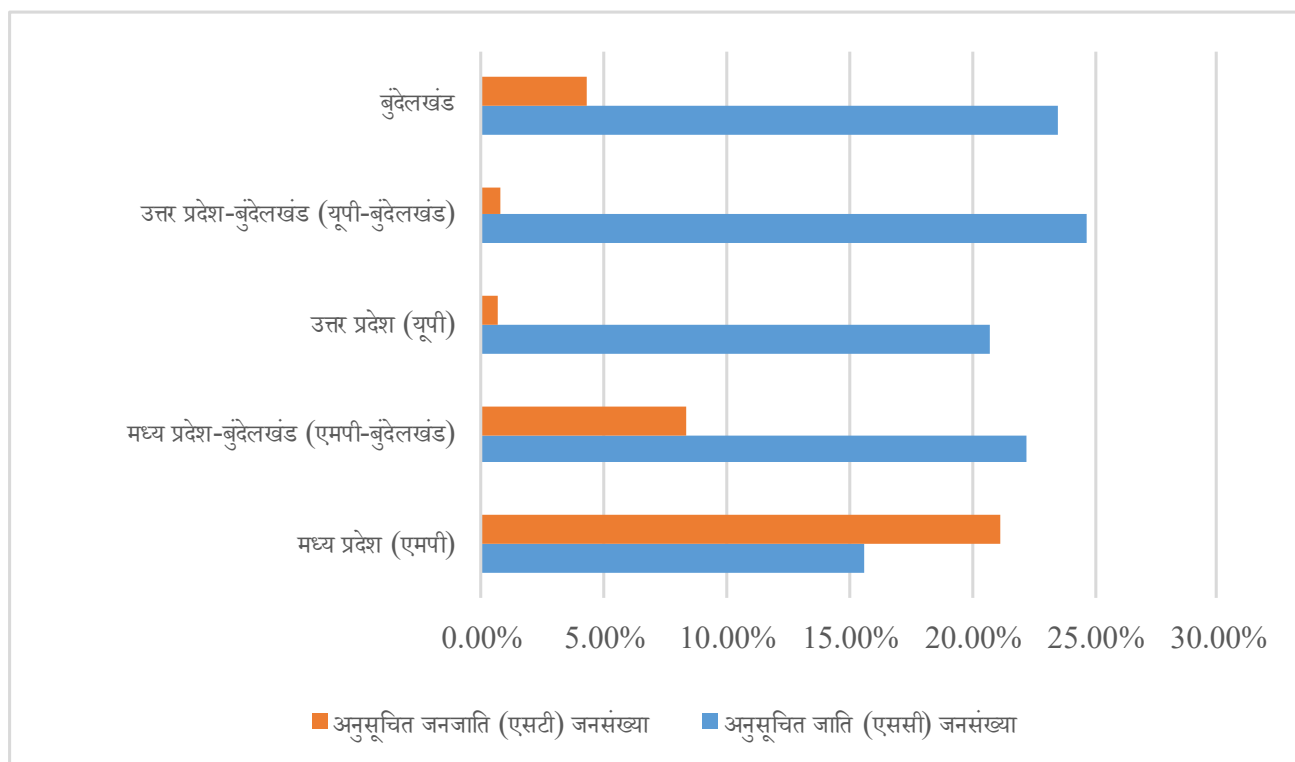


चित्र 1: बुंदेलखंड क्षेत्र में जिलेवार जनसंख्या - तालिका 2 में मध्य प्रदेश (MP), उत्तर प्रदेश (UP) और उनके बुंदेलखंड क्षेत्र के साथ-साथ दोनों राज्यों को मिलाकर बने संयुक्त बुंदेलखंड क्षेत्र में अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) जनसंख्या के अनुपातिक प्रतिनिधित्व का विवरण दिया गया है। विशेष रूप से, दोनों राज्यों में SC जनसंख्या का घनत्व, ST जनसंख्या की तुलना में अधिक है।

तालिका 2 : बुंदेलखंड में अनुसूचित जाति व जनजाति का प्रतिशत

2011 में बुंदेलखंड में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या		
राज्य/जिला	अनुसूचित जाति (एससी) जनसंख्या	अनुसूचित जनजाति (एसटी) जनसंख्या
मध्य प्रदेश (एमपी)	15.60%	21.10%
मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड (एमपी-बुंदेलखंड)	22.20%	8.30%
उत्तर प्रदेश (यूपी)	20.70%	0.60%
उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड (यूपी-बुंदेलखंड)	24.70%	0.80%
बुंदेलखंड	23.50%	4.30%

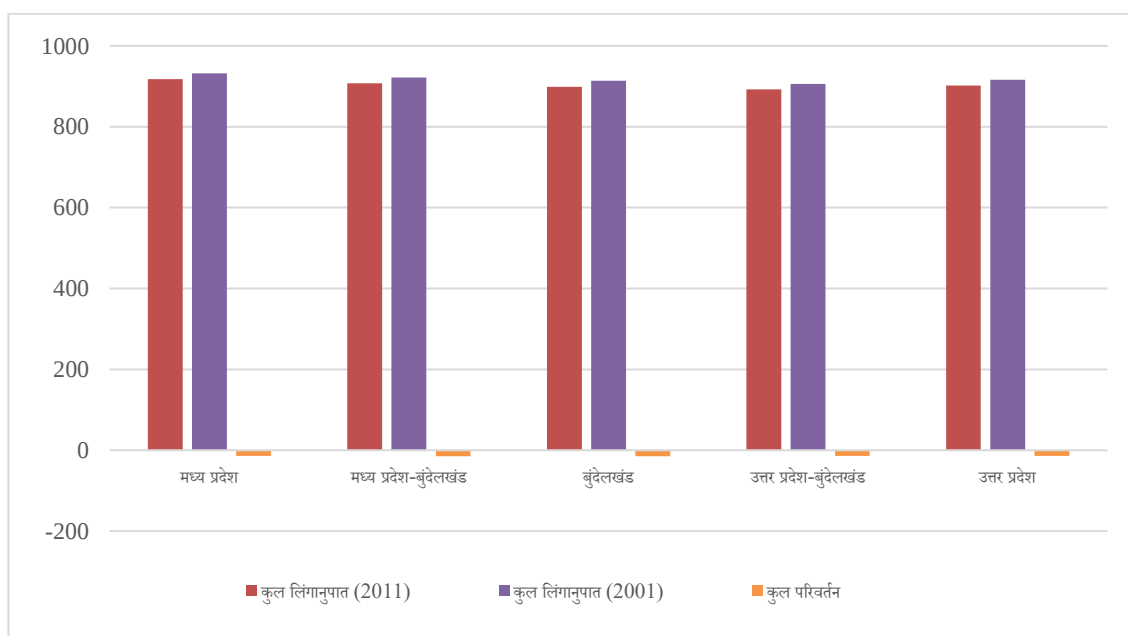
स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है



चित्र 2 : बुंदेलखंड में अनुसूचित जाति व जनजाति का प्रतिशत - मध्य प्रदेश (MP) में अनुसूचित जाति (SC) जनसंख्या का प्रतिशत 15.60% है, जबकि अनुसूचित जनजाति (ST) की उपस्थिति अधिक है, जो 21.10% है। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश (UP) में SC जनसंख्या 20.70% के साथ अधिक है, जबकि ST जनसंख्या मात्र 0.60% है। बुंदेलखंड उप-क्षेत्रों में भी असमानता देखी गई है। MP बुंदेलखंड में SC जनसंख्या 22.20% के साथ अधिक है, जबकि ST जनसंख्या 8.30% पर कम है। वहीं, UP बुंदेलखंड में SC जनसंख्या का घनत्व 24.70% के साथ और भी अधिक है, जबकि ST जनसंख्या मात्र 0.80% है। संयुक्त बुंदेलखंड क्षेत्र में SC जनसंख्या 23.50% और ST जनसंख्या 4.30% है, जो क्षेत्र में SC जनसंख्या के प्रभुत्व को दर्शाता है।

1.3.1.2 लिंगानुपात– लिंगानुपात किसी भी क्षेत्र की सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण घटक है, जिससे वहां महिलाओं की जनसंख्या में हिस्सेदारी का आकलन किया जाता है।

तालिका 3 में मध्य प्रदेश (MP) और उत्तर प्रदेश (UP) में 2001 और 2011 की जनगणना के आधार पर लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या) का तुलनात्मक विश्लेषण दिया गया है। इस आंकड़े को कुल, ग्रामीण और शहरी जनसंख्या में विभाजित किया गया है, जिससे जनसांख्यिकीय परिवर्तनों को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। सभी क्षेत्रों में 2001 से 2011 के बीच लिंगानुपात में गिरावट देखी गई है, जो पुरुष प्रधान स्थिति को दर्शाता है। मध्य प्रदेश में कुल लिंगानुपात 14 अंकों की गिरावट के साथ 932 (2001) से घटकर 918 (2011) हो गया है, जबकि उत्तर प्रदेश में भी इतनी ही गिरावट हुई है, जहां लिंगानुपात 916 (2001) से घटकर 902 (2011) हो गया है। दोनों राज्यों में ग्रामीण क्षेत्रों का लिंगानुपात, शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक है, लेकिन गिरावट ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक दर्ज की गई है। मध्य प्रदेश में ग्रामीण लिंगानुपात 16 अंकों की गिरावट के साथ 939 से 923 हो गया, जबकि शहरी लिंगानुपात 6 अंकों की गिरावट के साथ 907 से 901 हो गया।



चित्र 3 : बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों में लिंगानुपात

तालिका 3 : बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों में लिंगानुपात

बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों में लिंगानुपात									
क्षेत्र	कुल लिंगानुपात (2011)	कुल लिंगानुपात (2001)	कुल परिवर्तन	ग्रामीण लिंगानुपात (2011)	ग्रामीण लिंगानुपात (2001)	ग्रामीण परिवर्तन	शहरी लिंगानुपात (2011)	शहरी लिंगानुपात (2001)	शहरी परिवर्तन
मध्य प्रदेश	918	932	-14	923	939	-16	901	907	-6
मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड	907	922	-15	908	923	-15	905	913	-8
बुंदेलखंड	899	914	-15	901	917	-16	891	900	-9
उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड	892	906	-14	895	911	-16	878	888	-1
उत्तर प्रदेश	902	916	-14	906	921	-15	885	890	

स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है

उत्तर प्रदेश में भी ग्रामीण क्षेत्रों में लिंगानुपात में 15 अंकों की गिरावट देखी गई, जो 921 (2001) से घटकर 906 (2011) हो गया, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह गिरावट 5 अंकों की रही, जो 890 से 885 हो गई। यह दर्शाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में लिंगानुपात में गिरावट को प्रभावित करने वाले कारक अधिक प्रभावी हो सकते हैं। तालिका 3 में मध्य प्रदेश को उप-क्षेत्रों में विभाजित किया गया है, जिसमें MP-बुंदेलखंड और बुंदेलखंड क्षेत्र शामिल हैं। इन उप-क्षेत्रों में भी लिंगानुपात में गिरावट देखी गई है, हालांकि गिरावट की मात्रा में हल्का अंतर है। उदाहरण के लिए, बुंदेलखंड में कुल लिंगानुपात 15 अंकों की गिरावट के साथ 2001 में 925 से घटकर 2011 में 910 हो गया, जबकि MP-बुंदेलखंड में भी 14 से 15 अंकों की समान गिरावट दर्ज की गई। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच असमानता, जो मध्य प्रदेश के समग्र आंकड़ों में देखी गई थी, वह उप-क्षेत्रों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है (चित्र 3)। सभी श्रेणियों और क्षेत्रों में लिंगानुपात में लगातार गिरावट, एक चिंताजनक प्रवृत्ति को दर्शाती है। यह गिरावट लिंग चयनात्मक गर्भपात, बालिकाओं की उपेक्षा और अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों की ओर इशारा करती है, जो लैंगिक असंतुलन को बढ़ावा देते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक गिरावट दर्शाती है कि इन क्षेत्रों में विशेष नीति-निर्धारण और हस्तक्षेप की आवश्यकता है। 2001 और 2011 की जनगणना के बीच लिंगानुपात में अंतर का विश्लेषण, जनसांख्यिकीय परिवर्तनों की ओर महत्वपूर्ण संकेत देता है और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

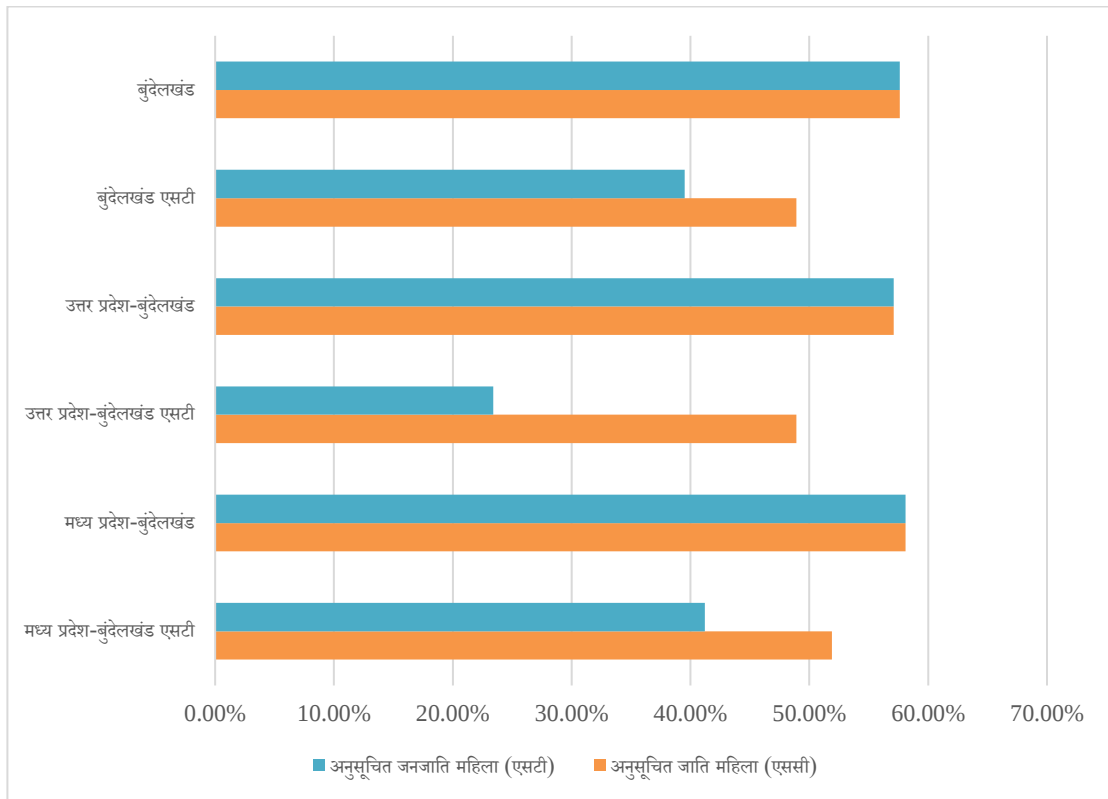
1.3.1.3 साक्षरता- तालिका 4 में बुंदेलखंड क्षेत्र में अनुसूचित जाति (SC) और अनुसूचित जनजाति (ST) की महिला साक्षरता दर का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। इसमें बुंदेलखंड को समग्र रूप से और इसके भीतर मध्य प्रदेश (MP) तथा उत्तर प्रदेश (UP) में विभाजित करके आंकड़े प्रस्तुत किए गए हैं। ST महिलाओं की साक्षरता दर की स्थिति SC महिलाओं और सामान्य महिला जनसंख्या की तुलना में काफी कम है (तालिका 4)। यह ST समुदायों, विशेषकर महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों को दर्शाता है। MP-बुंदेलखंड में SC महिलाओं की साक्षरता दर 58.10% है, जबकि ST महिलाओं की साक्षरता दर 41.20% ही है। यह सामान्य और SC महिला साक्षरता दर तथा ST महिला साक्षरता दर के बीच लगभग 17 प्रतिशत का अंतर दिखाता है, जो ST समुदाय की शैक्षणिक पिछड़ापन को उजागर करता है।

तालिका 4 : बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की साक्षरता दर

बुंदेलखंडके विभिन्न क्षेत्रों में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की साक्षरता दर		
क्षेत्र	अनुसूचित जाति महिला (एससी)	अनुसूचित जनजाति महिला (एसटी)
मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड एसटी	51.90%	41.20%
मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड	58.10%	58.10%
उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड एसटी	48.90%	23.40%
उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड	57.10%	57.10%
बुंदेलखंड एसटी	48.90%	39.50%
बुंदेलखंड	57.60%	57.60%

स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है

उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड में भी SC महिलाओं की साक्षरता दर 57.10% है (चित्र 4)। हालांकि, ST महिलाओं की साक्षरता दर घटकर मात्र 23.40% रह जाती है, जो इस क्षेत्र में ST महिलाओं की शिक्षा संबंधी स्थिति को और अधिक कमजोर दिखाती है। यह आंकड़ा दर्शाता है कि ST समुदाय की महिलाएं, SC महिलाओं की तुलना में भी अधिक शैक्षणिक वंचितता का सामना कर रही हैं, जिससे ST महिलाओं की शिक्षा प्राप्ति में गंभीर असमानता स्पष्ट होती है।



चित्र4: बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की साक्षरता दर

ST महिलाओं की साक्षरता दर में यह भारी गिरावट दर्शाती है कि उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में शिक्षा प्राप्ति के लिए सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाएं अधिक गंभीर हैं। पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र की बात करें तो ST और SC महिलाओं की साक्षरता दर समान रूप से 57.60% है, जबकि ST महिलाओं की समग्र साक्षरता दर 39.50% है। यह आंकड़ा राज्यवार आंकड़ों की प्रवृत्ति को पुष्ट करता है, जिससे स्पष्ट होता है कि ST महिलाओं और अन्य महिला वर्गों के बीच साक्षरता में भारी अंतर है।

तालिका 5 में शैक्षिक ढांचे और संसाधनों की क्षेत्रीय विविधताओं को दर्शाया गया है। हालांकि, शौचालय और सुरक्षित पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाओं में सुधार हुआ है, लेकिन शिक्षकों की उपलब्धता, बिजली कनेक्टिविटी और कंप्यूटर पहुंच के मामले में अब भी चुनौतियां बनी हुई हैं, विशेष रूप से मध्य प्रदेश और उसके बुंदेलखंड उप-क्षेत्र में। इस तालिका में भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों, जैसे मध्य प्रदेश (MP), उत्तर प्रदेश (UP), उनके बुंदेलखंड उप-क्षेत्रों, संयुक्त बुंदेलखंड क्षेत्र और राष्ट्रीय औसत के बीच शैक्षिक ढांचे और

संसाधन उपलब्धता की तुलनात्मक स्थिति प्रस्तुत की गई है। इसमें स्कूल सुविधाओं से जुड़े प्रमुख संकेतक शामिल हैं, जैसे एकल-शिक्षक स्कूलों का अनुपात, बालिकाओं के लिए शौचालय की उपलब्धता, सुरक्षित पेयजल (SDW) तक पहुंच, बिजली कनेक्टिविटी और कंप्यूटर की उपस्थिति।

सभी आंकड़े प्रतिशत में प्रस्तुत किए गए हैं, जिससे क्षेत्रीय तुलना में आसानी होती है। एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि मध्य प्रदेश में एकल-शिक्षक स्कूलों का अनुपात 14.9% है, जो राष्ट्रीय औसत 8.3% से काफी अधिक है। उत्तर प्रदेश में भी यह अनुपात राष्ट्रीय औसत से अधिक है, लेकिन यहां यह 9% है, जो मध्य प्रदेश से कम है। बुंदेलखंड उप-क्षेत्र (MP और

UP दोनों) में भी एकल-शिक्षक स्कूलों की संख्या राष्ट्रीय औसत से अधिक है, जो क्षेत्र में शिक्षा व्यवस्था की चुनौतियों को दर्शाता है।

तालिका5: बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के लिए शैक्षिक सुविधाएं

बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के लिए शैक्षिक सुविधाएं					
राज्य/जिला	एकल शिक्षक विद्यालय	लड़कियों के लिए शौचालय वाले विद्यालय	सुरक्षित पेयजल (एसडीपी) वाले विद्यालय	बिजली वाले विद्यालय	कंप्यूटर वाले विद्यालय
मध्य प्रदेश (एमपी)	14.9	76.3	98	22.5	11
उत्तर प्रदेश (यूपी)	9	81.3	98.5	34.8	7.5
मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड (एमपी-बुंदेलखंड)	12.3	89.1	99.8	18.5	9.7
उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड (यूपी-बुंदेलखंड)	9.8	90.7	97.6	41	7.9
बुंदेलखंड	11	89.9	98.7	29.8	8.8
भारत	8.3	72.2	94.4	47.1	20.5

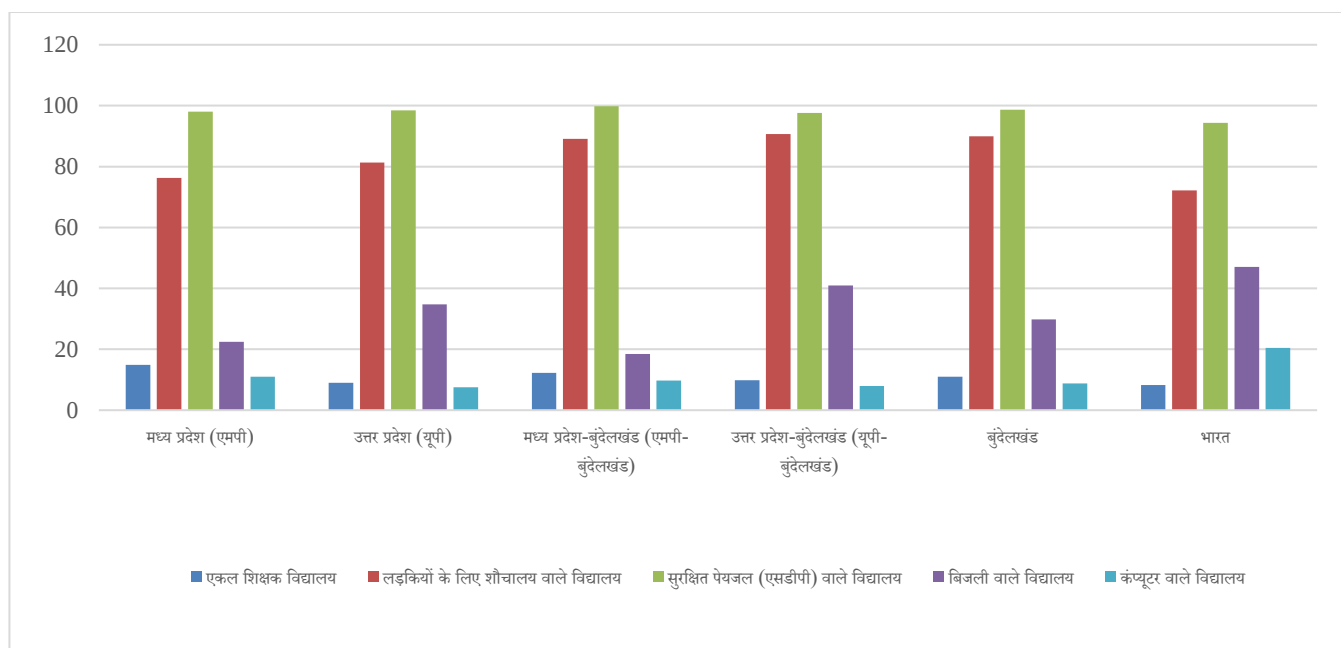
स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है

यह प्रवृत्ति शिक्षकों की उपलब्धता और उनके असमान वितरण की संभावित चुनौतियों को दर्शाती है, विशेष रूप से इन क्षेत्रों में। संयुक्त बुंदेलखंड क्षेत्र में औसतन 11% स्कूलों में केवल एक शिक्षक है, जो शिक्षा व्यवस्था में कमजोरी को दर्शाता है।

स्वच्छता सुविधाओं की बात करें तो, तालिका से स्पष्ट होता है कि मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश (उनके बुंदेलखंड उप-क्षेत्रों सहित) में बालिकाओं के लिए शौचालय वाले स्कूलों का प्रतिशत राष्ट्रीय औसत (72.2%) से काफी अधिक है। बुंदेलखंड क्षेत्र में यह आंकड़ा 89.9% है, जो सबसे अधिक है। यह सकारात्मक रुझान लड़कियों की शिक्षा और उपस्थिति को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक स्वच्छता सुविधाओं में प्रगति को दर्शाता है।

सुरक्षित पेयजल (SDW) तक पहुंच के मामले में, सभी क्षेत्रों में स्थिति संतोषजनक है, जहां 90% से अधिक स्कूलों में सुरक्षित पेयजल उपलब्ध है। MP-बुंदेलखंड क्षेत्र में यह प्रतिशत 99.8% है, जो सबसे अधिक है (चित्र5)। यह व्यापक उपलब्धता दर्शाती है कि स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। हालांकि, राष्ट्रीय औसत भी उच्च है, लेकिन यह 94.4% पर थोड़ा कम है।

हालांकि, बिजली कनेक्टिविटी को लेकर विभिन्न क्षेत्रों में काफी असमानता देखी जाती है, जो दर्शाता है कि सभी स्कूलों में अब भी बिजली आपूर्ति सुनिश्चित नहीं हो पाई है।



चित्र5 : बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के लिए शैक्षिक सुविधाएं

उत्तर प्रदेश में बिजली कनेक्टिविटी वाले स्कूलों का प्रतिशत 34.8% है, जो मध्य प्रदेश (22.5%) की तुलना में अधिक है। खासकर, UP-बुंदेलखंड में यह प्रतिशत 41% है, जो पूरे क्षेत्र में सबसे अधिक है। इसके विपरीत, राष्ट्रीय औसत 47.1% है, जो दर्शाता है कि कुछ क्षेत्र, विशेष रूप से मध्य प्रदेश और उसका बुंदेलखंड उप-क्षेत्र, विद्युतीकरण में पीछे हैं।

स्कूलों में कंप्यूटर उपलब्धता को लेकर महत्वपूर्ण असमानता देखी जाती है। मध्य प्रदेश में सबसे कम प्रतिशत (11%) स्कूलों में कंप्यूटर हैं, इसके बाद MP- बुंदेलखंड (9.7%) का स्थान है। उत्तर प्रदेश और उसके बुंदेलखंड उप-क्षेत्र में भी स्थिति खराब है, जहां कंप्यूटर वाले स्कूलों का प्रतिशत क्रमशः 7.5% और 7.9% है। संयुक्त बुंदेलखंड क्षेत्र का औसत मात्र 8.8% है, जो राष्ट्रीय औसत (20.5%) की तुलना में काफी कम है। यह दर्शाता है कि MP, UP और उनके उप-क्षेत्रों में डिजिटल सुविधाओं की भारी कमी है, जिससे डिजिटल विभाजन (डिजिटल डिवाइड) स्पष्ट रूप से नजर आता है।

1.3.2 आर्थिक

1.3.2.1 व्यवसायिक परिदृश्य

तालिका में बुंदेलखंड क्षेत्र में महिला श्रम भागीदारी का विभिन्न व्यवसायिक श्रेणियों में तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसमें मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमाओं के अनुसार महिला श्रम भागीदारी को दर्शाया गया है और इसे 2011 के राज्य और राष्ट्रीय औसत के साथ तुलना की गई है। पेशेवर श्रेणियों में शामिल हैं: कृषक (कुल किसान), कृषि श्रमिक, कुल कृषि, भागीदारी (कृषक + कृषि श्रमिक), घरेलू उद्योग (HH), अन्य व्यवसाय प्रतिशत में प्रस्तुत आंकड़े क्षेत्रीय असमानता को दर्शाते हैं। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि बुंदेलखंड क्षेत्र में महिलाओं की कृषि गतिविधियों में भागीदारी राष्ट्रीय औसत की तुलना में काफी अधिक है। विशेष रूप से, संयुक्त बुंदेलखंड क्षेत्र में कुल कृषि भागीदारी (कृषक और कृषि श्रमिक) 68.4% है, जो भारत के औसत (50.2%) से कहीं अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि बुंदेलखंड में महिलाओं का मुख्य रोजगार कृषि आधारित है, जबकि अन्य व्यवसायों में उनकी भागीदारी अपेक्षाकृत कम है।

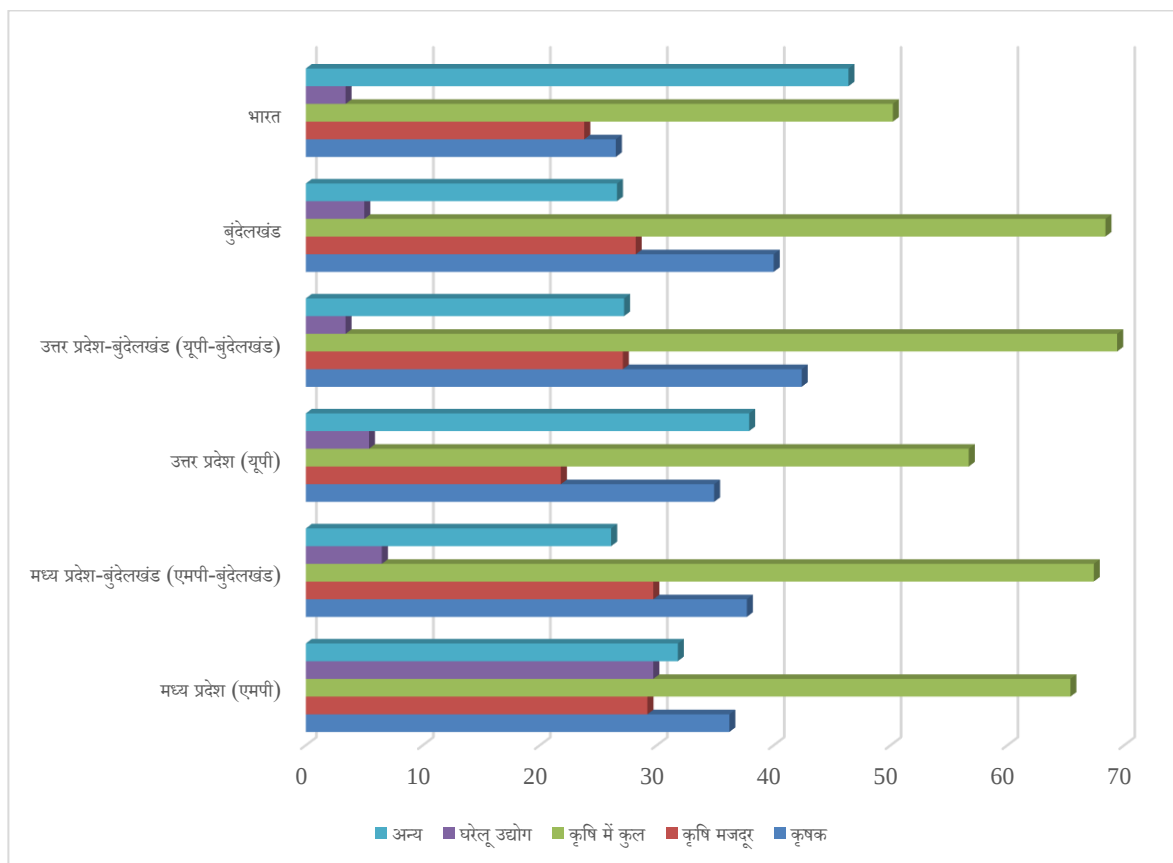
तालिका 6 : 2011 में बुंदेलखंड में विभिन्न व्यवसायों में महिलाओं की भागीदारी

2011 में बुंदेलखंड में विभिन्न व्यवसायों में महिलाओं की भागीदारी					
क्षेत्र	कृषक	कृषि मजदूर	कृषि में कुल	घरेलू उद्योग	अन्य
मध्य प्रदेश (एमपी)	36.2	29.2	65.4	29.7	31.8
मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड (एमपी-बुंदेलखंड)	37.7	29.7	67.4	6.5	26.1
उत्तर प्रदेश (यूपी)	34.9	21.8	56.7	5.4	37.9
उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड (यूपी-बुंदेलखंड)	42.4	27.1	69.4	3.4	27.2
बुंदेलखंड	40	28.2	68.4	5	26.6
भारत	26.5	23.8	50.2	3.4	46.4

स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है

यह प्रवृत्ति मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड (67.4%) और उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड (69.4%) दोनों में समान रूप से दिखाई देती है, जिससे कृषि क्षेत्र में महिला श्रमिकों की मजबूत निर्भरता स्पष्ट होती है। विशेष रूप से, बुंदेलखंड में महिला कृषकों का अनुपात (40%) राष्ट्रीय औसत (26.5%) की तुलना में अधिक है। इसी तरह, कृषि श्रमिकों में महिला भागीदारी भी अधिक है, जहां बुंदेलखंड में यह दर 28.2% है, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर यह 23.8% है।

इसके विपरीत, गृह उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी बुंदेलखंड में अपेक्षाकृत कम है। यहां यह औसतन 5% है, जबकि पूरे भारत में यह दर 3.4% है। यदि आंकड़ों का और अधिक विश्लेषण किया जाए तो उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड में यह भागीदारी 3.4% और मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड में 6.5% है। यह स्थिति क्षेत्र में गैर-कृषि और घरेलू-आधारित आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की सीमित भूमिका को दर्शाती है।



चित्र 6: बुंदेलखंड में विभिन्न व्यवसायों में महिलाओं की भागीदारी(2011)

“अन्य” श्रेणी, जिसमें कृषि और गृह उद्योगों के अलावा अन्य व्यवसाय शामिल हैं, बुंदेलखंड में महिलाओं की भागीदारी दर 26.6% है, जो राष्ट्रीय औसत 46.4% की तुलना में काफी कम है। यह अंतर क्षेत्र में पारंपरिक कृषि भूमिकाओं के बाहर महिला रोजगार में कम विविधता को दर्शाता है। राज्य-स्तरीय तुलना में उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड में कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी, मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड की तुलना में अधिक है। हालांकि, दोनों उप-क्षेत्रों में कृषि पर अत्यधिक निर्भरता और गृह उद्योगों में कम महिला भागीदारी का समान पैटर्न दिखाई देता है।

1.3.2.2 प्रति व्यक्ति आय

विभिन्न क्षेत्रों, जैसे मध्य प्रदेश (MP), उत्तर प्रदेश (UP), उनके संबंधित बुंदेलखंड उप-क्षेत्र (MP-बुंदेलखंड, UP-बुंदेलखंड), समग्र बुंदेलखंड क्षेत्र और भारत में प्रति व्यक्ति आय (PCI) और उसकी वृद्धि दर का विश्लेषण किया गया है। इसमें वित्तीय वर्ष 2004-05 से 2010-11 तक का डेटा शामिल है, जिसमें पूरे अवधि और एक उप-अवधि (2007-08 से 2010-11) की वृद्धि दर को मापा गया है।

प्रति व्यक्ति आय (PCI) को भारतीय रुपये (₹) में वर्तमान कीमतों पर दर्शाया गया है। तालिका 4.10 में दिखाया गया है कि अवलोकन अवधि के दौरान सभी क्षेत्रों में PCI में लगातार वृद्धि हुई, हालांकि वृद्धि की मात्रा में काफी भिन्नता थी।

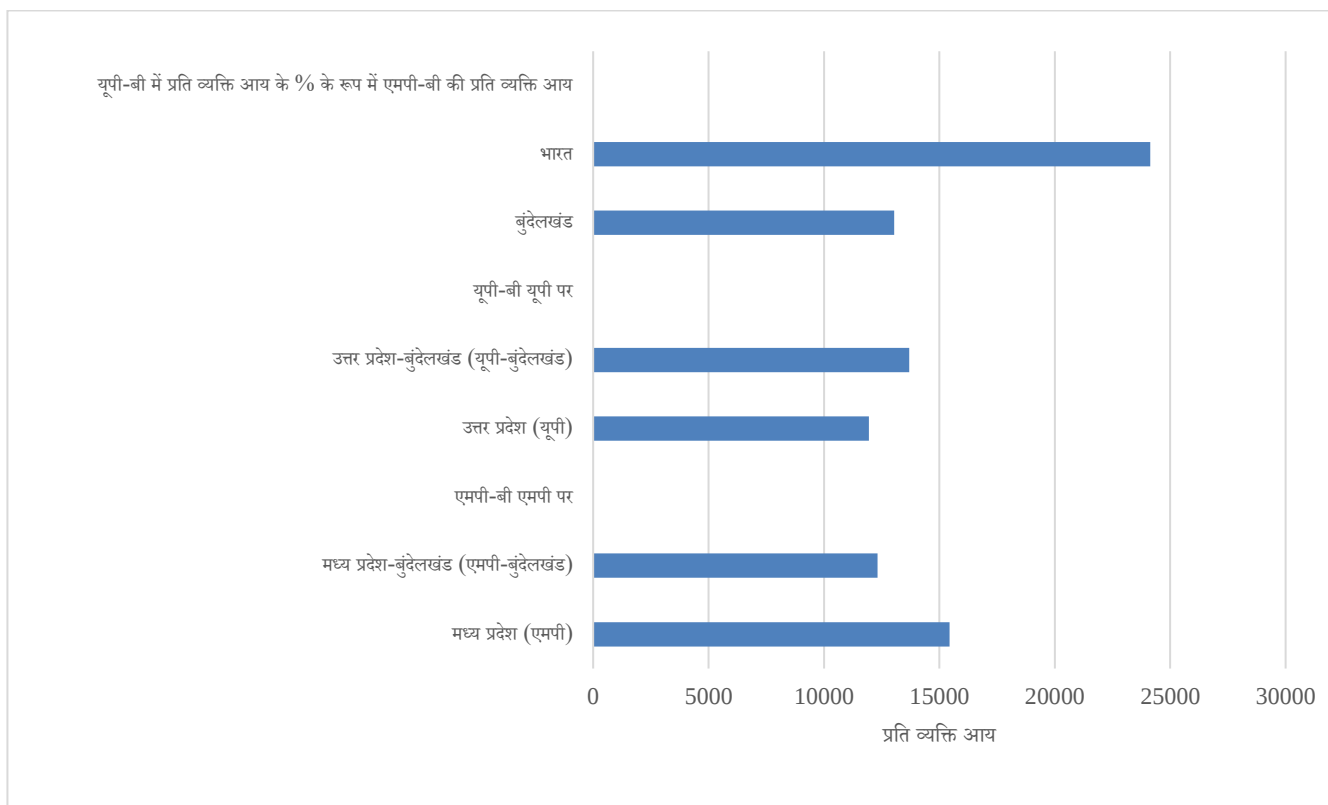
उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश में PCI वर्ष 2004-05 में ₹15,442 से बढ़कर 2010-11 में ₹32,223 हो गई, जो पूरी अवधि के लिए 13% वार्षिक वृद्धि दर और उप-अवधि में 15.5% प्रति वर्ष की वृद्धि दर को दर्शाती है। इसी प्रकार, उत्तर प्रदेश में PCI ₹11,941 से बढ़कर ₹26,355 हो गई, जिसकी वार्षिक वृद्धि दर क्रमशः पूरी अवधि के लिए 14.1% और उप-अवधि के लिए 14.4% रही।

तालिका में बुंदेलखंड के उप-क्षेत्रों (MP-बुंदेलखंड और UP-बुंदेलखंड) की तुलनात्मक आर्थिक स्थिति को भी दर्शाया गया है। उल्लेखनीय रूप से, दोनों अवधियों में UP-बुंदेलखंड का PCI, MP-बुंदेलखंड की तुलना में अधिक रहा। हालांकि, 2007-08 से 2010-11 की उप-अवधि में UP-बुंदेलखंड की वृद्धि दर (20.2%) MP- बुंदेलखंड (16.3%) की तुलना में काफी अधिक थी।

तालिका 7 : वर्तमान कीमतों पर प्रति व्यक्ति आय और विकास दर

वर्तमानकीमतों पर प्रति व्यक्ति आय और विकास दर	
राज्य/जिला	वर्तमान कीमतों पर प्रति व्यक्तिआय और विकास दर (रुपये) 2004-05
मध्य प्रदेश (एमपी)	15442
मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड (एमपी-बुंदेलखंड)	12320
एमपी-बी एमपी पर	0.798
उत्तर प्रदेश (यूपी)	11941
उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड (यूपी-बुंदेलखंड)	13694
यूपी-बी यूपी पर	1.147
बुंदेलखंड	13045
भारत	24143
यूपी-बी में प्रति व्यक्ति आय के % के रूप में एमपी-बी की प्रतिव्यक्ति आय	0.9

स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है



चित्र 7 : वर्तमान कीमतों पर प्रति व्यक्ति आय और विकास दर

MP-बुंदेलखंड की प्रति व्यक्ति आय (PCI) का अनुपात, मध्य प्रदेश की PCI की तुलना में 0.798 से घटकर 0.781 हो गया, जो सापेक्ष गिरावट को दर्शाता है। इसके विपरीत, UP-बुंदेलखंड की PCI का अनुपात, उत्तर प्रदेश की PCI की तुलना में 1.147 से घटकर 1.091 हो गया, फिर भी यह 1 से ऊपर बना रहा। इसका अर्थ है कि UP-बुंदेलखंड की PCI, उत्तर प्रदेश के औसत PCI से अधिक थी और बनी रही।

संयुक्त बुंदेलखंड क्षेत्र की PCI की गणना करने पर, दोनों उप-क्षेत्रों (MP-बुंदेलखंड और UP-बुंदेलखंड) के बीच एक मध्यवर्ती स्थिति स्पष्ट हुई। तुलनात्मक रूप से, UP-बुंदेलखंड ने लगातार MP-बुंदेलखंड की तुलना में PCI के मामले में बेहतर प्रदर्शन किया। MP-बुंदेलखंड की PCI का अनुपात, UP-बुंदेलखंड की PCI की तुलना में 0.9 से घटकर 0.876 हो गया, जिससे दोनों के बीच का आर्थिक अंतर और बढ़ गया। सभी क्षेत्रों की PCI की तुलना राष्ट्रीय औसत से करने पर यह पाया गया कि भारत की PCI ₹24,143 से बढ़कर ₹53,331 हो गई, जिसकी वृद्धि दर क्रमशः 14.1% और 14.2% रही। यह दर्शाता है कि सभी क्षेत्रों में वृद्धि हुई, लेकिन दर और वास्तविक मूल्य में अंतर रहा, जो क्षेत्रीय आर्थिक असमानताओं को दर्शाता है।

1.3.2.3 संसाधनों की उपलब्धता

तालिका 8 में विभिन्न क्षेत्रों - मध्य प्रदेश (MP), उत्तर प्रदेश (UP) और भूगोलिक रूप से ओवरलैप होते बुंदेलखंड क्षेत्र में घरेलू स्तर पर पेयजल के स्रोतों की तुलनात्मक स्थिति को दर्शाया गया है।

बुंदेलखंड एक शुष्क क्षेत्र है, जहां महिलाओं को रोजमर्रा के उपयोग के लिए पानी लाने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। इसलिए, यहां सुरक्षित और असुरक्षित पेयजल स्रोतों का डेटा महत्वपूर्ण है। तालिका में जल स्रोतों को चार मुख्य श्रेणियों

में विभाजित किया गया है: 1. शुद्ध स्रोतों से आने वाला नल का पानी, 2. अशुद्ध स्रोतों से आने वाला नल का पानी, 3. खुले कुएं का पानी, 4. हैंडपंप का पानी

इसके अलावा, यह तालिका उन घरों का प्रतिशत भी दर्शाती है, जिन्हें सुरक्षित पेयजल उपलब्ध नहीं है। यह आंकड़ा क्षेत्र में स्वास्थ्य और स्वच्छता की स्थिति को प्रदर्शित करता है।

तथ्य यह दर्शाते हैं कि शुद्ध नल के पानी तक पहुंच में असमानता है। उत्तर प्रदेश में शुद्ध नल जल प्राप्त करने वाले घरों का प्रतिशत सबसे अधिक (20.2%) है, जबकि मध्य प्रदेश में यह 16.4% है। इसके विपरीत, बुंदेलखंड क्षेत्र में यह दर काफी कम (11.6%) है, जो शुद्ध पानी की आपूर्ति में बुनियादी ढांचे की चुनौतियों को दर्शाता है। बुंदेलखंड में MP-बुंदेलखंड की स्थिति और भी खराब है, जहां यह प्रतिशत मात्र 8.9% है। अशुद्ध नल जल का उपयोग सभी क्षेत्रों में कम है, जो आमतौर पर 7% से नीचे है, जिससे इस स्रोत पर कम निर्भरता स्पष्ट होती है।

हालांकि, खुले कुएं का उपयोग एक बड़ी चिंता का विषय है। MP-बुंदेलखंड में 31.5% घर खुले कुओं पर निर्भर हैं, जो जल संदूषण के संभावित जोखिम को दर्शाता है। इसके बाद बुंदेलखंड (20.5%) और मध्य प्रदेश (18.9%) का स्थान आता है। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश में खुले कुओं का उपयोग सबसे कम (3.4%) है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वहां वैकल्पिक जल स्रोतों पर अधिक निर्भरता है।

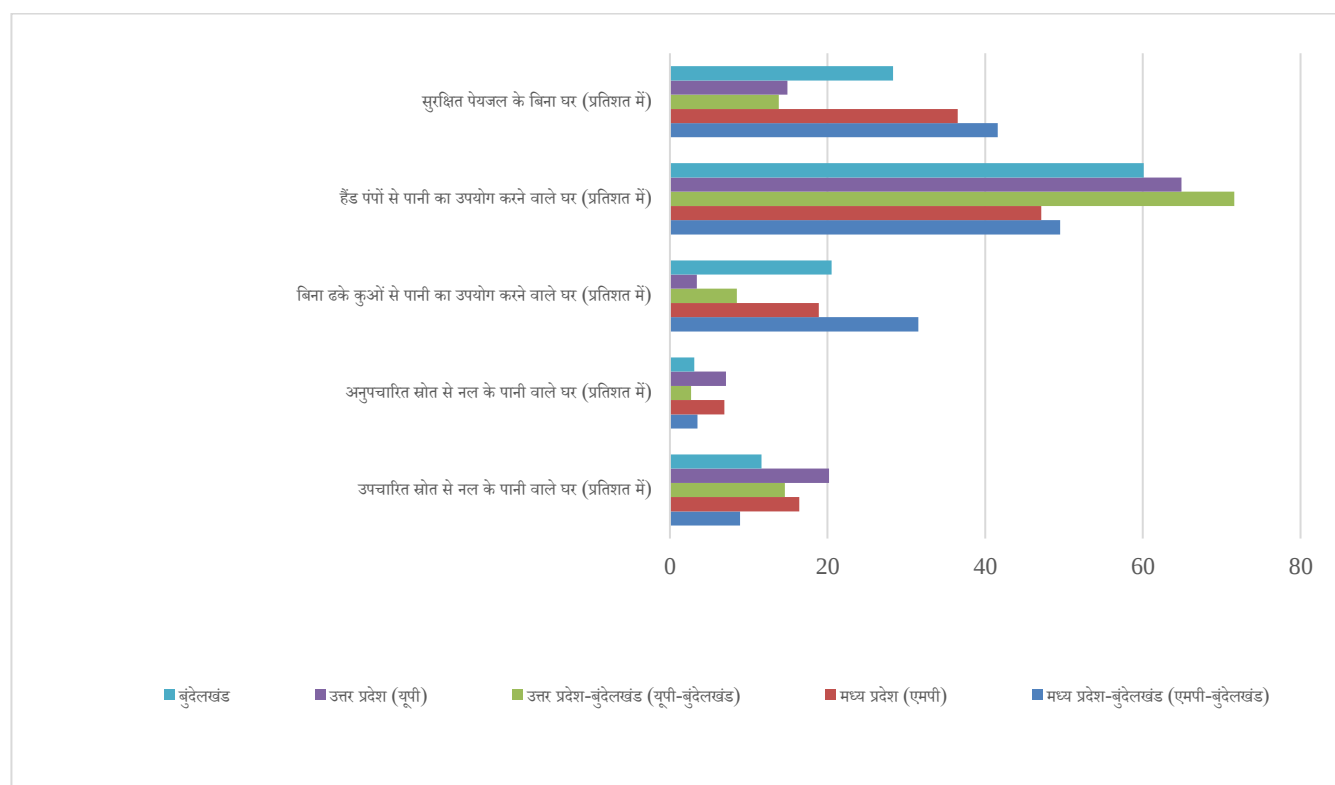
हैंडपंप प्रमुख जल स्रोत हैं, विशेष रूप से UP-बुंदेलखंड (71.6%) और उत्तर प्रदेश (64.9%) में, जिससे भूजल पर अत्यधिक निर्भरता का संकेत मिलता है। बुंदेलखंड (60.1%) और MP (47.1%) में भी हैंडपंपों पर काफी हद तक निर्भरता दिखाई देती है।

तालिका 8 : विभिन्न क्षेत्रों में पेयजल के स्रोतों तक घरेलू पहुंच

विभिन्न क्षेत्रों में पेयजल के स्रोतों तक घरेलू पहुंच					
क्षेत्र	उपचारित स्रोत से नल के पानी वाले घर (प्रतिशत में)	अनुपचारित स्रोत से नल के पानी वाले घर (प्रतिशत में)	बिना ढके कुओं से पानी का उपयोग करने वाले घर (प्रतिशत में)	हैंड पंपों से पानी का उपयोग करने वाले घर (प्रतिशत में)	सुरक्षित पेयजल के बिना घर (प्रतिशत में)
मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड (एमपी-बुंदेलखंड)	8.9	3.5	31.5	49.5	41.6
मध्य प्रदेश (एमपी)	16.4	6.9	18.9	47.1	36.5
उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड (यूपी-बुंदेलखंड)	14.6	2.7	8.5	71.6	13.8
उत्तर प्रदेश (यूपी)	20.2	7.1	3.4	64.9	14.9
बुंदेलखंड	11.6	3.1	20.5	60.1	28.3

स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है

सुरक्षित पेयजल से वंचित घरों का प्रतिशत, क्षेत्र में जल सुरक्षा की समग्र स्थिति को दर्शाता है। MP-बुंदेलखंड में यह समस्या सबसे गंभीर है, जहां 41.6% घरों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध नहीं है। इसके बाद मध्य प्रदेश का स्थान है, जहां 36.5% घरों को सुरक्षित जल की सुविधा नहीं मिलती। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश और UP-बुंदेलखंड में यह प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है – क्रमशः 14.9% और 13.8%, जिससे इन क्षेत्रों में सुरक्षित पेयजल की बेहतर उपलब्धता स्पष्ट होती है।



चित्र 8 : विभिन्न क्षेत्रों में पेयजल के स्रोतों तक घरेलू पहुंच

संयुक्त बुंदेलखंड क्षेत्र में 28.3% घरों को सुरक्षित पेयजल नहीं मिल पा रहा है। यह आंकड़ा क्षेत्र में जल सुरक्षा की असमानता को दर्शाता है और विशेष रूप से बुंदेलखंड तथा मध्य प्रदेश में जल सुरक्षा में सुधार के लिए लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता को उजागर करता है।

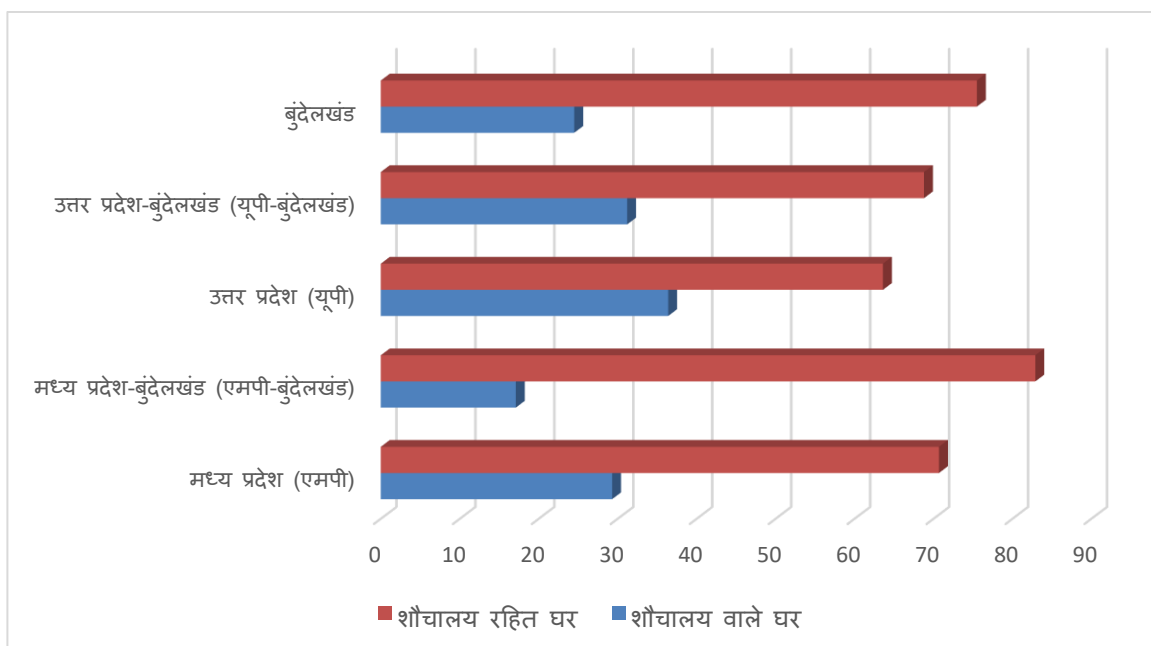
तालिका 8 में विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों – मध्य प्रदेश (MP), उत्तर प्रदेश (UP) और दोनों राज्यों में फैले बुंदेलखंड क्षेत्र में घरेलू शौचालय की उपलब्धता का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। घर में शौचालय की उपलब्धता सीधे तौर पर महिलाओं की गरिमा और सम्मान से जुड़ी होती है। इसलिए, इस डेटा में घरों को शौचालय वाली और बिना शौचालय वाली श्रेणियों में विभाजित किया गया है। मध्य प्रदेश में शौचालय वाले घरों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम (29.3%) है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यहां बड़ी संख्या में घर (70.7%) शौचालय की सुविधा से वंचित हैं। MP-बुंदेलखंड में यह स्थिति और अधिक गंभीर है, जहां केवल 17.1% घरों में ही शौचालय की सुविधा उपलब्ध है, जबकि 82.9% घरों में शौचालय नहीं है। यह क्षेत्र में साफ-सफाई की गंभीर चुनौती को दर्शाता है।

तालिका 9 : बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों में शौचालय सुविधा

बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों में शौचालय सुविधा		
राज्य/जिला	शौचालय वाले घर	शौचालय रहित घर
मध्य प्रदेश (एमपी)	29.3	70.7
मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड (एमपी-बुंदेलखंड)	17.1	82.9
उत्तर प्रदेश (यूपी)	36.4	63.6
उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड (यूपी-बुंदेलखंड)	31.2	68.8
बुंदेलखंड	24.5	75.5

स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है

यह आंकड़ा राज्य के भीतर असमानता को दर्शाता है, जो बुंदेलखंड क्षेत्र में गहरी स्वच्छता संकट की स्थिति को उजागर करता है। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश की स्थिति मध्य प्रदेश की तुलना में कुछ बेहतर है, जहां 36.4% घरों में शौचालय की सुविधा उपलब्ध है। हालांकि, अब भी 63.6% घरों में यह बुनियादी सुविधा नहीं है, जो क्षेत्र में स्वच्छता संबंधी गंभीर चुनौती को दर्शाता है।



चित्र 9 : बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों में शौचालय सुविधा

UP-बुंदेलखंड उप-क्षेत्र की स्थिति भी MP-बुंदेलखंड के समान ही है, जहां शौचालय की पहुंच अपेक्षाकृत कम है। यहां केवल 31.2% घरों में शौचालय की सुविधा है, जबकि 68.8% घरों में यह सुविधा नहीं है। तालिका 9 में संपूर्ण बुंदेलखंड क्षेत्र (MP और UP दोनों हिस्सों) का संयुक्त डेटा प्रस्तुत किया गया है। समग्र रूप से 24.5% घरों में शौचालय की

सुविधा उपलब्ध है, जबकि 75.5% घरों में इसकी कमी है। यह साझा आंकड़ा, राज्य सीमाओं की परवाह किए बिना, बुंदेलखंड क्षेत्र में व्यापक स्वच्छता संकट को दर्शाता है।

1.3.3 स्वास्थ्य

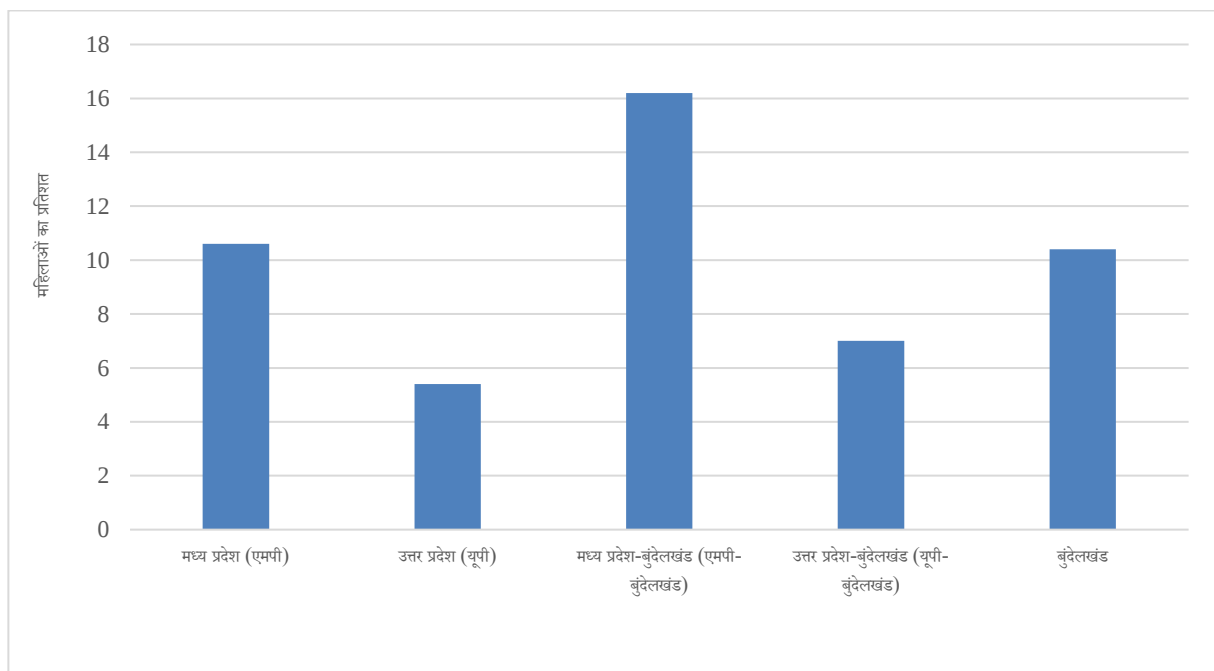
1.3.3.1 महिलाओं का स्वास्थ्य- कम उम्र में विवाह का महिलाओं के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और इससे उनकी उत्पादकता भी घट जाती है। तालिका10 में भारत के विभिन्न क्षेत्रों, विशेष रूप से मध्य प्रदेश (MP) और उत्तर प्रदेश(UP) में 18 वर्ष की कानूनी उम्र से पहले विवाह करने वाली महिलाओं का प्रतिशत दर्शाया गया है, जिसमें उनके संबंधित बुंदेलखंड उप-क्षेत्रों का भी विस्तृत वर्गीकरण किया गया है। डेटा को कुल, ग्रामीण और शहरी आबादी के आधार पर विभाजित किया गया है, जिससे इन क्षेत्रों में बाल विवाह की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सकता है। सभी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों में बाल विवाह की दर, शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक पाई गई। मध्य प्रदेश में कुल बाल विवाह की दर 10.6% है, जहां ग्रामीण क्षेत्रों में यह 14.1% और शहरी क्षेत्रों में मात्र 3.7% है। वहीं, उत्तर प्रदेश में कुल बाल विवाह की दर 5.4% है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में यह 6.7% और शहरी क्षेत्रों में 1.6% है।

तालिका10 : बुंदेलखंड में कानूनी उम्र से पहले विवाहित महिलाओं का प्रतिशत

बुंदेलखंड में कानूनी उम्र से पहले विवाहित महिलाओं का प्रतिशत	
क्षेत्र	कानूनी उम्र (18 वर्ष) से पहले विवाहित महिलाओं का प्रतिशत
मध्य प्रदेश (एमपी)	10.6
उत्तर प्रदेश (यूपी)	5.4
मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड (एमपी-बुंदेलखंड)	16.2
उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड (यूपी-बुंदेलखंड)	7
बुंदेलखंड	10.4

स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है

बुंदेलखंड उप-क्षेत्र, जो मध्य प्रदेश (MP) और उत्तर प्रदेश (UP) दोनों में फैला हुआ है, बाल विवाह की और भी अधिक गंभीर स्थिति को दर्शाता है। MP-बुंदेलखंड में बाल विवाह की कुल दर 16.2% है, जो सभी क्षेत्रों में सबसे अधिक है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह दर 19.7% तक



चित्र 10 : बुंदेलखंड में कानूनी उम्र से पहले विवाहित महिलाओं का प्रतिशत- पहुंच जाती है। इसके विपरीत, UP-बुंदेलखंड में यह दर अपेक्षाकृत कम है, लेकिन फिर भी चिंताजनक है। यहां कुल बाल विवाह दर 7% है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में यह 8.4% तक पहुंच जाती है। यदि पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र को एकीकृत रूप में देखा जाए, तो बाल विवाह की कुल दर 10.4% है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह 12.4% दर्ज की गई है।

1.3.3.2 बाल स्वास्थ्य - तालिका11में बुंदेलखंड क्षेत्र और उसके आसपास के क्षेत्रों में बच्चों की मृत्यु दर का डेटा प्रस्तुत किया गया है। इसमें मुख्य रूप से मध्य प्रदेश (MP) और उत्तर प्रदेश (UP) के आंकड़े शामिल हैं, जो तीन अवधियों - 2010-11, 2012-13 और 2014-15 के दौरान एकत्र किए गए हैं।

इस अवधि में अधिकांश क्षेत्रों में मृत्यु दर में गिरावट का रुझान देखा गया, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं या जीवन स्थितियों में सुधार का संकेत मिलता है। हालांकि, मृत्यु दर और उसमें होने वाले सुधार की गति राज्यों और क्षेत्रों के अनुसार काफी भिन्न है।

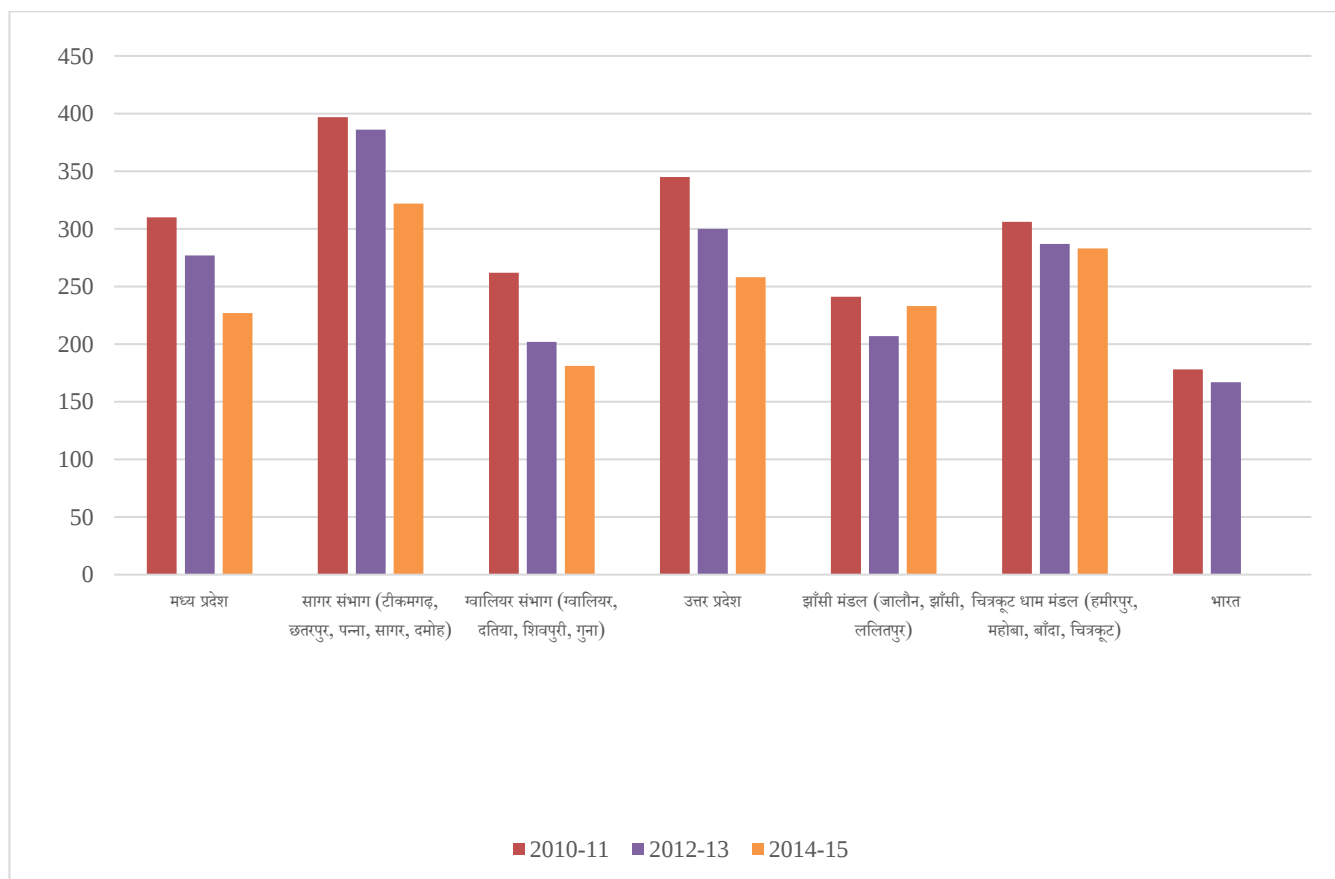
मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश दोनों में समय के साथ मृत्यु दर में कमी दर्ज की गई है। हालांकि, मध्य प्रदेश में मृत्यु दर लगातार उत्तर प्रदेश की तुलना में कम रही। मध्य प्रदेश के भीतर, सागर डिवीजन में मृत्यु दर सबसे अधिक दर्ज की गई, हालांकि यहां भी मृत्यु दर में धीरे-धीरे गिरावट आई है।

तालिका11 : बुंदेलखंड क्षेत्र में विभिन्न क्षेत्रों में मृत्यु दर

बुंदेलखंड क्षेत्र में विभिन्न क्षेत्रों में मृत्यु दर			
राज्य / जिला	2010-11	2012-13	2014-15
मध्य प्रदेश	310	277	227
सागर संभाग (टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सागर, दमोह)	397	386	322

ग्वालियर संभाग (ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, गुना)	262	202	181
उत्तर प्रदेश	345	300	258
झाँसी मंडल (जालौन, झाँसी, ललितपुर)	241	207	233
चित्रकूट धाम मंडल (हमीरपुर, महोबा, बाँदा, चित्रकूट)	306	287	283
भारत	178	167	0

स्रोत : शोधकर्ता द्वारा भारत की जनगणना 2001-2011 के आधार पर गड़ना किया गया है



चित्र 11 : बुंदेलखंड क्षेत्र में विभिन्न क्षेत्रों में मृत्यु दर- मध्य प्रदेश में ग्वालियर डिवीजन की मृत्यु दर सबसे कम है और यहां सुधार की दर भी सबसे अधिक रही है। वहीं, उत्तर प्रदेश में झाँसी मंडल की मृत्यु दर पहले दो अवधियों में राज्य में सबसे

कम थी, लेकिन अंतिम दर्ज अवधि में इसमें वृद्धि देखी गई। उत्तर प्रदेश के चित्रकूट धाम मंडल में भी मृत्यु दर में गिरावट दर्ज की गई, हालांकि यह गिरावट अपेक्षाकृत कम थी। भारत की राष्ट्रीय औसत मृत्यु दर, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश दोनों की तुलना में काफी कम थी, जो क्षेत्रीय असमानताओं को दर्शाती है। हालांकि, 2014-2015 के लिए भारत की राष्ट्रीय औसत मृत्यु दर का कोई आंकड़ा दर्ज नहीं है।

1.4 निष्कर्ष- महिलाएं अस्तित्व की व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और उनका विकास समाज की समग्र प्रगति के लिए अनिवार्य है। किसी भी देश के सामाजिक-आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका रीढ़ की हड्डी के समान होती है। महिलाओं की पिछड़ी स्थिति राष्ट्र की शांति, समृद्धि और कल्याण को प्रभावित करती है।

इस अध्ययन में बुंदेलखंड क्षेत्र में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य विकास का मूल्यांकन किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि अधिकांश क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है। महिलाएं सामाजिक व्यवस्था में पिछड़ी हुई हैं, जिसका मुख्य कारण है: शिक्षा की कमी, जागरूकता का अभाव, रोजगार ढांचे में कम भागीदारी, अधिकांशतः अपने कृषि कार्यों में ही संलग्न रहना, पारंपरिक सामाजिक मानदंडों का प्रभाव। ये सभी कारक बुंदेलखंड में महिलाओं को विकास के मामले में पीछे धकेल रहे हैं। क्षेत्र में व्याप्त पितृसत्ता और महिलाओं की द्वितीयक सामाजिक स्थिति उनके पिछड़ेपन का प्रमुख कारण है। महिला और पुरुष साक्षरता में असमानता यह दर्शाती है कि शिक्षा के माध्यम से आगे बढ़ने की इच्छा महिलाओं में अपेक्षाकृत कम है, जो सामाजिक पिछड़ेपन को दर्शाता है। हालांकि, डेटा यह भी दिखाता है कि महिलाओं को अवसर मिल रहे हैं और वे विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में भाग ले रही हैं। स्वास्थ्य के मामले में, बुंदेलखंड की महिलाओं की स्थिति आंशिक रूप से बेहतर है, क्योंकि वे चिकित्सा सुविधाओं का लाभ ले रही हैं। उनके बच्चों को भी उचित स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं मिल रही हैं।

इस अध्ययन में यह भी सामने आया कि उत्तर प्रदेश में शिशु मृत्यु दर (IMR), मध्य प्रदेश की तुलना में अधिक है। हालांकि, कुल मिलाकर मध्य प्रदेश-बुंदेलखंड का प्रदर्शन उत्तर प्रदेश-बुंदेलखंड की तुलना में बेहतर पाया गया है।

संदर्भ सूची

1. बोरा, जे. के., और सैकिया, एन. (2018). भारतीय जिलों में नवजात और पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर: सतत विकास लक्ष्य 3 के संदर्भ में विश्लेषण। भारत के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS), 2015-2016 का विश्लेषण।
2. भारत की जनगणना, 1991। जनगणना संचालन निदेशालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली।
3. भारत की जनगणना, 2001। जनगणना संचालन निदेशालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली।
4. भारत की जनगणना, 2011। जनगणना संचालन निदेशालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली।
5. मध्य प्रदेश का सांख्यिकीय सारांश, 2022। अर्थशास्त्र और सांख्यिकी निदेशालय, उत्तर प्रदेश सरकार, भारत।
6. उत्तर प्रदेश का सांख्यिकीय सारांश, 2023। अर्थशास्त्र और सांख्यिकी निदेशालय, उत्तर प्रदेश सरकार, भारत।